class 9th hindi notes Chapter 1 पद

पद

लेखक -रैदास

कवि – परिचय

रैदास नाम से विख्यात संत कवि रविदास का जन्म बनारस में सन् 1388 में और निर्वाण बनारस में ही सन् 1518 में हुआ , ऐसा माना जाता है । रैदास रामानन्द की संत परंपरा में दीक्षित हुए । इनका मुख्य पेशा मोची का काम था । रैदास के पद गुरु ग्रंथ साहब और संत वाणी में संकलित है

मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है । रामानंद के बारह शिष्यों में रैदास भी माने जाते हैं । रैदास ने अपने पदों में कबीर और सेन का उल्लेख किया है । साथ ही धन्ना , नाभादास , प्रियदास और मीराबाई ने भी रैदास का नामोल्लेख सम्मानपूर्वक किया है । ऐसी मान्यता है कि मीरा उनकी शिष्या थीं । सच्चाई चाहे जो हो इतना तो स्पष्ट है कि रैदास का महत्व सबने स्वीकार किया है ।

रैदास की विचारधारा और सिद्धांत संत – मत परम्परा के अनुरूप ही है । उनका ज्ञान साधना और अनुभूति पर आधारित था । उनके अनुसार परम तत्व सत्य है जो अनिवर्चनीय है और व्याख्यातीत है :

“जस हरि कहिए तह हरि नाहीं ।
है अस जस कछु तैसा । “

यह जड़ और चेतन सभी में व्याप्त है । वे मानते हैं कि भक्ति के लिए वैराग्य जरूरी है । यद्यपि रैदास की भक्ति का ढाँचा निर्गुणवादियों का ही है , किंतु उनका स्वर कबीर जैसा आक्रामक नहीं । मूर्तिपूजा , तीर्थयात्रा जैसे दिखावों में रैदास का जरा भी विश्वास न था । वह व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाइचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे ।

इनका आत्मनिवेदन दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्वेलित करते हैं । रैदास की कविता की विशेषता उनकी निरीहता है । वे अनन्यता पर बल देते हैं । रैदास में नरीहता के साथ – साथ कुंठाहीनता का भाव द्रष्टव्य है । भक्ति – भावना ने उनमें बल भर दिया था , जिसके आधार पर वे डंके की चोट पर घोषित कर सके :

जाके कुटुंब सब ढोर ढोवंत
फिरहिं अजहुँ बनारसी आस – पासा ।
आचार सहित विप्र करहिं डंडउति
तिन तनै रविदास दासानुदासा ।

भाषा की दृष्टि से रैदास की भाषा सरल , प्रवाहमयी और गेय है जिसे अरबी , फारसी , पंजाबी , गुजराती आदि के शब्द सहज भाव के अनुसार मिल जाते हैं । सीधे – सादे पदों में संत कवि हृदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं ।

कविता का भावार्थ

प्रथम पद – ‘ प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ‘ में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे तुलना करता है । वह कहता है – हे प्रभुजी तुम चंदन के समान शीतलता प्रदान करने वाले , चंदन के सुगंध के समान हर जगह रहनेवाले हो और मैं पानी हूँ । जिस प्रकार चंदन पानी के बिना अपने रूप में नहीं आता उसी प्रकार में तुममें समाहित हूँ । तुम वन के घन हो और मैं वन का मोर हूँ । जैसे चकोर चंद्रमा को देखता रहता है उसी प्रकार में भी

https://www.evidyarthi.in/

तुम्हें निहारता रहता हूँ । जिस प्रकार बाती के बिना दीपक का अस्तित्व नहीं होता । उसी प्रकार मेरा अस्तित्व भी तुम्हारे होने को लेकर ही है । जिस प्रकार ज्योति सारी रात प्रकाशित होती रहती है उसी प्रकार मेरे अंतस को प्रकाशित कीजिए । तुम यदि मोती हो तो मैं धागा हूँ । जिस प्रकार सोने को शुद्ध करने के लिए सुहागा को जरूरत होती है , यदि वह मिल जाती है तो सोना शुद्ध हो जाता है उसी प्रकार मैं तुमसे मिलने को चाहता हूँ , जिससे मेरा शुद्धीकरण हो जाए । तुम हमारे स्वामी हो और मैं तुम्हारा दास हूँ ।

द्वितीय पद – कवि की नजर में ईश्वर की आराधना में प्रयुक्त फूल – फल अनुपम नहीं लागते हैं । उसे जूठे और गंदले लगते हैं । इसीलिए वह कहता है – राम में पूजा कहाँ चढ़ाऊँ । गाय के थान को उसका बछड़ा जूठा कर देती है । पुष्प को भौंरा , जल को मछली बिगाड़ देती है । अतः प्रभु मैं मन – ही – मन तुम्हारी पूजा अर्चना करता हूँ । अब तुम्ही बताओ मेरी क्या गति होगी ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/